IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारत में ग्रामीण विकास: गाँधीय उपागम

नीरज मीना

एम.फिल, शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

सारांश:

गाँधी जी ने ग्रामीण भारत के सामान्य जन के जीवन स्तर को उन्नत करने को ही ग्रामीण विकास की संज्ञा दी है। गांधी ने 1935 में वर्धा के सेवाग्राम आश्रम में ग्रामीण पुनर्निर्माण हेतु 18 सूत्रीय रचनात्मक कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की । गाँधी के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रों में भोजन, वस्त्र, आवास, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार जैसी बुनियादी आवश्यकताएँ उपलब्ध होनी चाहिए । गाँधी के अनुसार भारत गाँवों में ही बसता है । हमें ग्रामीण जनता को भी विकास की प्रक्रिया में भागीदार बनाना है । गाँधीजी का जीवन ग्रामीण विकास को ही समर्पित था, क्योंकि ग्राम निर्माण के बिना भारत का विकास सम्भव नहीं है। महात्मा गाँधी ने ही समन्वित ग्रामीण विकास की ओर ध्यान आकर्षित कराया। गाँधी के स्वतंत्रता आन्दोलन में भी ग्रामीण आत्मनिर्भरता परिलक्षित हुई। भारत को उन्नत करने के लिए गाँवों की दशा में सुधार करना होगा। देश के विकास कार्यक्रमों में ग्राम केन्द्रीय इकाई के रूप में होना चाहिए। गाँधी की ग्राम विकास की अवधारणा में सत्य, अंहिसा जनकल्याण, स्वदेशी, की भावना निहित हैं। गाँधी ने नैतिक आध्यात्मिक मूल्यों पर बल दिया। पंचायती राज के द्वारा ग्रामीण विकास सुनिश्चित हो सकेगा।

संकेताक्षर: ग्राम स्वराज, रचनात्मक कार्यक्रम, पंचायती राज व्यवस्था, विकेन्द्रीकरण, ग्रामीण अर्थव्यवस्था, रामराज्य, ट्रस्टीशिप, ग्रामीण कौशल, खादी–ग्रामोद्योग ।

प्रस्तावना:

मैं ऐसे भारत के लिए कार्य करूंगा जहाँ अत्यन्त गरीब व्यक्ति यह अनुभव करे कि यह उसका अपना देश हैं जिसके निर्माण में उसकी भी प्रभावी भूमिका हो। ऐसा भारत जहाँ सभी समुदाय पूर्ण मैत्रीभाव से रह सके। – **महात्मा गाँधी**

महात्मा गाँधी की भारतीय समाज के बारे में सोच ग्रामीण व्यवस्था पर ही आधारित थी। भारत गाँवों में झोपडियों के अन्दर निवासता है न कि शहरों में महलो के अन्दर । वे ग्राम की वास्तविक परिस्थितियों से काफी अच्छी तरह वाकिफ थे। गाँधी जी रचनात्मक कार्यक्रमों के माध्यम से सर्वांगीण ग्रामीण विकास को हासिल करना चाहते थे।

ग्रामीण विकास का अभिप्राय आर्थिक – सामाजिक जीवन स्तर में वृद्धि हैं तथा ग्रामीण जनसंख्या के निम्न आय समूह के लोगों के जीवन स्तर में सुधार करना है। गाँव में लोगों की मूल जरूरतो को पूरा करने के साथ सामाजिक सुविधा उपलब्ध कराना होगा। बुनियादी स्तर पर लोगों की भागीदारी हो। गाँधीजी ने ग्रामीण विकास को ही भारत का वास्तविक विकास माना। गाँधी की रामराज्य की अवधारणा आदर्श ग्राम की प्राप्ति पर आधारित थी। भारत के सन्दर्भ में ग्रामीण विकास कृषि तथा सहायक गतिविधियों का अधिकतम उत्पादन होने से लिया जाता है । ग्रामीण क्षेत्रों में उद्योगों की स्थापना की जाए। ग्रामीणों को रोजगार के अधिकतम अवसर उपलब्ध कराये जाए। गाँधीय उपागम ग्रामीण विकास को आदर्श मानकर मूल्यों पर अधिक बल देता है। महात्मा गाँधी भारत को गाँवों में निवास करने वाली जनसंख्या के रूप में निर्धारित करते है । गाँधी ने सम्पूर्ण तथा जन–केन्द्रित ग्रामीण विकास को सुनिश्चित करने हेतु सत्य, अंहिसा, लोक कल्याण को महत्वपूर्ण कारक माना। गाँधी रस्किन, टाल्सटॅाय, गीता से प्रभावित थे। देश की समृद्धि ग्रामीण

अर्थव्यवस्था को सुदृढ करने से ही बढती है । गाँधीजी ने 1935 में वर्धा के सेवाग्राम आश्रम में 18 सूत्रीय रचनात्मक कार्यक्रमों के द्वारा ग्रामीण पुनर्निर्माण को सफलतापूर्वक संचालित किया। गाँधी के सपनो का भारत ग्रामीण जनसंख्या को आत्मनिर्भर एवं समृद्धशील बुनियादी अवसंरचना का विकास सुनिश्चित करने से है ।

गाँधी के सपनो का ग्रामीण भारत

गाँधी के सपनो का ग्रामीण भारत पूर्व ब्रिटिश काल का है जहाँ गणराज्य अवस्थित थे। औद्योगीकरण तथा पश्चात सभ्यता से ग्रामीण क्षेत्रों का पतन होता है। इसलिए आत्मनिर्भर ग्राम की संकल्पना दी। गाँधीजी ने सर्वांगीण ग्रामीण विकास का विचार प्रस्तुत किया ।

1 **ट्रस्टीशिप** – न्यायसिता जीवन का एक रूप ही है प्रत्येक चीज ईश्वर से ही प्राप्त होती हैं कोई भी भौतिक चीज व्यक्तिगत न होकर सामूहिक रूप में विधमान होती है। प्रत्येक व्यक्ति को बुनियादी आवश्यकताओं की प्राप्ति का प्राकृतिक अधिकार होता है। यदि व्यक्ति को जरूरतों से अधिक संसाधनों की प्राप्ति होती है तो वह उसका ट्रस्टी या संरक्षक मात्र ही है। समुदाय का कल्याण सुनिश्चित होना चाहिए। अंहिसक विरोध से अमीर वर्ग के हृदय परिवर्तन होने से ट्रस्टीशिप के विचार को स्वीकार करेगें। धनी वर्ग गरीबों के सहयोग के बिना समृद्ध नही होगें।

2 **स्वदेशी** – यह एक नैतिक सिद्धान्त के रूप में भावना है जो हमारी आसपास की बाहरी चीजों को त्यागने से तथा यहां निर्मित वस्तुओं को अपनाने से आती है । यह विकेन्द्रित आत्म निर्भर अर्थव्यवस्था को रेखांकित करती है। गांधीजी ने प्रत्येक गांव को आत्मनिर्भर बनाने पर जोर दिया तथा आवश्यकता की वस्तुओं को ग्रामों के बीच परस्पर आदान–प्रदान करना चाहिए। स्थानीय उत्पादों को ही खरीदना चाहिए। गांधी जी ने गरीबी को दूर करने के लिए स्वेदशी को सशक्त हथियार बताया।

3 **आत्मनिर्भरता** – गांधी गावों को आत्मनिर्भर इकाई बनाना चाहते थे। ग्राम को आधारभूत वस्तुओं का उतपादन स्वंय ही करना चाहिए । कुटीर तथा हथरकरघा उधोगों को प्रोत्साहित किया जाए। ग्रामीण स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध होने चाहिए। सामुदायिकता का भाव समाहित होना चाहिए।

4 **कायिक श्रम** – गांधी जी रस्किन, टाल्सटॉय से प्रभावित थे। प्रत्येक मानव को भौतिक श्रम से ही आजीविका कमानी चाहिए। ईश्वर ने प्रत्येक को कार्य करने की क्षमता दी है तथा प्रतिदिन की जरूरत के हिसाब से कमाई भी हो जाती है । इससे बेरोजगारी की समस्या भी दूर होती हैं । श्रम की प्रतिष्ठा नये समाज की स्थापना करती है।

5 **ग्राम स्वराज** – ग्राम पर शासन करने का अधिकार वहां पर निवास कर रहे ग्रामीणों को दिये जाने से लोक कल्याणकारी कार्यो की पूर्ति सुनिश्चित होती है गांधीजी रामराज्य की आदर्श अवधारणा प्रतिपादित करते है। प्रत्येक गांव को खाद्यान्न एवं वस्त्र की आत्मनिर्भरता प्राप्त करनी चाहिए। ग्राम स्वराज्य की अवधारणा ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

ग्रामीण पुनर्निर्माण : 18 सूत्रीय रचनात्मक कार्यक्रम

गांधीजी ने 1935 में वर्धा के सेवाग्राम आश्रम में रचनात्मक कार्यक्रम को संचालित करने हेतु ग्रामीण पुनरूत्थान के 18 सूत्रीय बिन्दुओं का प्रयोग किया । सत्य और अंहिसा के द्वारा पूर्ण स्वराज को प्राप्त करने का तरीका बताया । यह समाज को बुनियादी स्तर के उपलब्ध संसाधनों को विकसित करने का कार्यक्रम था। विकेन्द्रित ग्रामीण अर्थव्यवस्था को आपसी सहयोग, आत्मनिर्भरता के लिए पूर्ण रोजगार उपलब्ध कराना चाहिए । प्रत्येक ग्राम को बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति स्वंय के द्वारा ही की जानी चाहिए । ग्रामीण क्षेत्र के वंचित वर्गो के सशक्तिकरण हेतु ग्रामीण पुनर्निमाण के 18 सूत्रीय कार्यक्रम शुरू किये गये।

1 **साम्प्रदायिक एकता** – साम्प्रदायिक एकता का महत्व राजनीतिक एकता से कही अधिक होता है । प्रत्येक सामाजिक कार्यकर्त्ता को हिन्दू मुस्लिम, सिख, ईसाई, यहूदी आदि धर्मो के बीच आपसी प्रेम सम्मान का भाव रखना चाहिए । राज्य की खुशहाली के लिए हिन्दू का पानी , मुस्लिम का पानी आदि में भेदभाव नही करना चाहिए। राष्ट्र की सामाजिक स्थिरता के लिए विभिन्न समुदायो में सामाजिक एकता स्थापित होनी चाहिए । गांधीजी ने हिन्दू–मुस्लिम एकता पर सर्वाधिक बल दिया। राष्ट्रीय आन्दोलनों में भी दोनो वर्गो ने बढ–चढकर हिस्सा लियां ।

2 **अस्पृश्यता उन्मूलन** – समाज के सभी लोगों में सामाजिक समानता होनी चाहिए । धर्म, जाति, लिंग,आदि के आधार पर किसी भी वर्ग से भेदभाव नही करना चाहिए । 1932 में गांधीजी ने हरिजन सेवक संघ नामक गैर राजनीतिक संगठन बनाया। चरखे के माध्यम से स्वरोजगार बढेगा । सभी हरिजनों को आत्मोन्नति के लिए स्वंय को सुदृढ करना होगा। तथा स्वरोजगार का प्रशिक्षण लेना चाहिए।

3 **मद्यनिषेध** – मदिरा, नशीले पदार्थ सामाजिक बुराई है । गाँधी जी ने इनके उपर नियत्रंण के लिए सरकार, सामाजिक संगठन–कार्यकत्ताओं द्वारा विभिन्न उपाय करने की सलाह दी । चरस, गांजा,अफीम, शराब, इत्यादि समाज को खोखला कर देती है । इससे शरीरिक नुकसान भी अत्यधिक होता है। यह व्यक्ति की मानसिकता को भी बीमार कर देती है। समाज की प्रगति में बाधक तत्व के रूप में विद्यमान है।

4 **खादी** – जीवन की आवश्यकताओं के उत्पादन –वितरण के साधनों का विकेन्द्रीकरण ही खादी है देश के सर्वागींण विकास हेतु खादी साधन मात्र हैं । घरेलु चरखे के बिना आर्थिक आजादी प्राप्त नहीं की जा सकती है । 1934 में गांधी जी ने हरिजन में लिखा खादी ग्रामीण व्यवस्था के सूर्य के समान है। खादी जीवन जीने की एक कला रूप भी है। खादी से आत्मनिर्भरता प्राप्त की जा सकती है।

5 **ग्रामोधोग** – गॉधीजी के अनुसार ग्रामीण अर्थव्यवस्था साबुन, माचिस, कागज, तेल, हथकरघा आदि उधोगों के बिना पूर्ण नही हो सकती है यह रोजगार का बहुत बडा साधन होता है ओद्योगीकरण ग्रामीण उधोगों को नष्ट कर देती है। गांधीजी मशीनों के पूर्ण रूप से विरोधी नहीं थे, अपितु वे यह मानते थे कि ग्राम द्वारा आधुनिक मशीनो के उपयोग को वहन किया जा सके तो ही प्रयोग में लेना चाहिए । यह शोषण का साधन नही बनना चाहिये।

6 **ग्रामीण स्वच्छता** – गॉधीजी जनस्वास्थ्य तथा स्वच्छता के नियमों का पालन करते तथा करवाते थे। मकान स्थानीय सामग्रीयों से ही बना होना चाहिए । मकान के प्रकाश हवा की पर्याप्त व्यवस्था हो गलियों में भी साफ–सफाई हो, स्वच्छ जल की आपूर्ति सुनिश्चित हो। घर में ही खाद्यान्न सामग्री उत्पादित की जाए।

7 **नई शिक्षा** – मात्र साक्षरता ही शिक्षा नहीं हैं यह व्यक्ति के सर्वागीण विकास हेतु अवश्यंभावी हैं । उनकी शिक्षा का दर्शन द. अफ्रीका के टाल्सटॉय फार्म में किये गये शारीरिक प्रयोग, नैतिक प्रशिक्षण पर आधारित थे। व्यावसायिक शिक्षा का प्रशिक्षण –बढई , मोची, बागवानी, आदि दिया जाए। बच्चों को मात्र किताबी ज्ञान ही न दिया जाना चाहिए।

8 **व्यस्क शिक्षा** – व्यस्क लोगों को भी साक्षर बनाया जाना चाहिए, जिससे वे प्रतिदिन की जिन्दगी में कुछ अच्छा कर सके । सामाजिक कार्यकत्ताओं द्वारा अशिक्षित लोगों को शिक्षा का ज्ञान दिया जाए। गॉव की जरूरत के हिसाब से प्रशिक्षित किया जाएं ।

9 **महिला** – गॉंधीजी स्त्री–पुरूष को विकास के समान अवसर देने के समर्थक थे। ये एक दूसरे के बिना विकसित नही हो सकेगें। स्त्री पुरूष समान मानसिक क्षमता, सम्मान रखते हैं । स्त्री गृहिणी के रूप में पुरूष की तुलना में अधिक अंहिसक होती है। स्त्री राष्ट्रनिर्माण में सर्वाधिक महत्वपूर्ण धुरी होती है।

10 **स्वास्थ्य तथा स्वच्छता शिक्षा** – स्वच्छ हवा में सॉंस लेना चाहिए। शारीरिक तथा मानसिक कार्यो में सन्तुलन होना चाहिए। स्वच्छता के सभी नियमों का पालन करना चाहिए । खान–पान तथा रहन–सहन में सात्विकता का पालन हो। मानव को स्वच्छ खाना ही लेना चाहिए।

11 **मातृभाषा** – बालक के मस्तिष्क के विकास हेतु तथा समझने की क्षमता को बढाने के लिए मातृभाषा का ही ज्ञान दिया जाना चाहिए। रूस तथा जापान ने भी अंग्रेजी के बिना ही महत्वपूर्ण प्रगति की है इसलिए भारत में क्षेत्रीय भाषाओं का ही अधिक से अधिक प्रचार होना चाहिए।

12 **आर्थिक समानता** – प्रत्येक मानव को पर्याप्त भोजन, आश्रय, वस्त्र स्वास्थ्य सुविधा, शिक्षा प्राप्त हो । समान काम को समान वेतन सुनिश्चित हो । कार्यक्षमता के अनुसार मजदूरी निर्धारित हो।

13 **किसान** – भारत की अधिकांश जनता खेती पर ही निर्भर हैं कृषि सुनियोजित योजना के अन्तर्गत ही होनी चाहिए । ताकि किसान अधिक पैदावार प्राप्त कर सके। कृषक संगठनों के द्वारा समस्या का समाधान किया जाएं ।

14 **श्रमिक** – भू–स्वामी वर्ग को अपनी आवश्यकता से अधिक सम्पदा प्राप्त नही करनी चाहिए । सामान्य जीवन जीते हुए गरीब तबके को ऊपर उठाने में मदद करनी चाहिए। भूमिहीन श्रमिको को आधारभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु पर्याप्त मजदूरी प्राप्त होनी चाहिए । बडे भू–स्वामियों को अपनी अधिक कृषिगत आय का फायदा श्रमिकों को प्रदान करना चाहिए।

15 **आदिवासी** – भारत जैसे विशाल देश में विभिन्न प्रकार की जातियां पाई जाती है लेकिन आदिवासी मूल निवासी हैं। गाँधीजी का मानना था कि सम्पन्न वर्ग द्वारा आदिवासी समुदाय के सर्वांगीण विकास हेतु योगदान दिया जाना चाहिए । गाँधीजी ने कार्यकत्ताओं को आदिवासियों के सशक्तिकरण हेतु महत्वपूर्ण निर्देश प्रदान किये । आदिवासियों के उन्नति करने से ही सच्चे अर्थ में ग्रामीण परिवेश में विकास की प्रक्रिया तीव्र हो सकेगी।

16 **राष्ट्रीय भाषा** – गॉधी जी के अनुसार भारत की राष्ट्र भाषा हिन्दी होनी चाहिए। क्योंकि हिन्दी सर्वाधिक लोगों को बोलचाल की भाषा हैं, अन्य प्रदेशों के लोगों को भी हिन्दी सीखने में ज्यादा परेशानी नही होती है । सभी महत्वपूर्ण गतिविधियाँ, कार्यक्रम हिन्दी माध्यम में ही होते हैं अधिकारी वर्ग हेतु भी हिन्दी सीखना आसान हैं।

17 **कुष्ठरोगी** – कुष्ठरोगी समूह की सेवा भी की जानी चाहिए मध्य अफ्रीका के बाद सर्वाधिक संख्या में कुष्ठरोगी निवास करते है । ये समाज के बहुत बडे तबके के रूप में विद्यमान हैं कुष्ठरोगीयों की आवश्यकताओं की उपेक्षा की जाती रही है । स्वराज्य में कोई आदमी परेशान नही होगा। कुष्ठरोगीयों के कल्याण हेतु सामाजिक कार्यकत्ताओं को मिशन मोड में दृढ निश्चय होकर कार्य करना चाहिए।

18 **छात्र** – छात्र की स्वतंत्रता मानवता के लिए हो। व्यक्तिगत जीवन में शुद्धता हो, ब्रह्मचारी हो, आत्मनियत्रंण हो। समुदाय के प्रति सेवा–भाव हो। छात्र श्रम की महता समझता हो । छात्र को खादी वस्त्र पहनने चाहिए । सूत कातने के साहित्य का अध्ययन करना चाहिए। छात्र को रचनात्मक कार्यक्रमों में संलग्न रहना चाहिए। सूत कातने के साहित्य का अध्ययन करना चाहिए। अशिक्षितों के लिए रात्रि स्कूल चलाना चाहिए। हरिजन आवासो को स्वच्छ करना चाहिए। छात्र को राजनीतिक दंलो से नहीं जुडना चाहिए । लकिन उन्हें सभी राजनीतिक विचारधाराओं का पर्याप्त ज्ञान होना चाहिए । उन्हें मत एवं अभिव्यक्ति की आजादी भी प्राप्त होनी चाहिए ।

निष्कर्ष :

गांधीजी की ग्रामीण विकास की अवधारणा सामान्य मानव के जीवन स्तर को उन्नत करना है। जिससे ग्राम का विकास हो सके। गांधीजी का मानना था कि शिक्षा और स्वास्थ्य से समन्वित ग्रामीण विकास सुनिश्चित हो सकेगा। गांधी के अनुसार ग्रामीण विकास का रूप अंहिंसक,स्वराज, आत्मनिर्भर हो।

गांधी जी ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था के कृषि तथा गैर–कृषि आयामों के द्वारा ग्रामीण भारत का विकास होना बताया । सामाजिक तथा राजनीतिक समानता स्थापित होने से विकास की प्रक्रिया तीव्रगामी हो जाती है । उन्होंने ग्रामीण विकास का सर्वथा भिन्न स्वरूप साझा किया कि यदि गॉधीजी उपागम के बारे में कोई संदेश हो तो वह व्यक्तिगत जीवन से निपटारा कर सकेगा। **श्रीमन् नारायण** कहते है कि गांधीजी का दर्शन भूत का न होकर भविष्य का हैं, वह मरे नहीं है, उनका संदेश सर्वमान्य है और आकाश में सूर्य के समान चिरंजीवी हैं । संविधान के नीति निर्देशक तत्वों में ग्रामीण विकास की गाँधीय सकल्पना को रेखांकित किया है । गाँधी के ग्रामीण पुनर्निर्माण के प्रोजेक्ट के उचित क्रियान्वचन से भारत में ग्रामीण जीवन में निश्चित तौर पर अभूतपूर्व सकारात्मक परिवर्तन परिलक्षित हो सकते है।

सन्दर्भ –

1 पाण्डे, देश, 1991, स्वतंत्रता के बाद भारत में ग्राम विकास और गाँधी दर्शन, जयपुर, मीनल प्रकाशन ।

2 पंत, डी.सी., 2011, भारत में ग्रामीण विकास, जयपुर, कॉलेज बुक डिपो।

3 गाँधी, एम.के., 1959, इण्डिया ऑफ माय ड्रीम्स, अहमदाबाद नवजीवन पब्लिशिंग हाउस।

4 शाह, एस.एम., 1977 रूरल डवलपमेन्ट प्लानिंग एण्ड रिफोर्म्स, नई दिल्ली ,अभिनव पब्लिकेशन ।

5 माहेश्वरी,श्रीराम, 1995, रूरल डवलपमेंट इन इण्डिया ए पब्लिक पॉलिसी एप्रोच , नई दिल्ली , सेज पब्लिकेशंस ।

6 पाण्डे, बी.पी., 1991, गांधी एण्ड इकोनोमिक डवलपमेंट, नई दिल्ली , रेडिएट पब्लिशर्स ।

7 देशमुख, सुशा, 2012, गाँधियन विजन ऑफ रूरल डवलपमेंट, इण्टरनेशनल रेफरड रिसर्च जर्नल वाल्यूम [illegible] – 37 ।